International Journal of Sanskrit Research
अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(4): 116-117
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 02-04-2022
Accepted: 09-06-2022

मौ. इरफान खॉ
सहायक प्रवक्ता, यासीन मेव डिग्री कालेज, नूँह मेवात, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
मौ. इरफान खॉ
सहायक प्रवक्ता, यासीन मेव डिग्री कालेज, नूँह मेवात, हरियाणा, भारत

भारतीय परम्परा मे काम का सास्ंकृतिक – स्वरूप – निरूपण

मौ. इरफान खॉ

प्रस्तावना

कामना अथवा मनोरथ का घोतक काम अथर्ववेद मे देवताओं की श्रेणी मे प्रतिष्ठित हो गया है। कामदेवता के नाम से अथर्ववेद मे एक सम्पूर्ण सूक्त उपलब्ध होता है। उसमे महान देवता और इन्द्र के पराक्रमपूर्ण कार्यो के समान ही काम की तुलना की गई है। एक मात्र मे उपासक कहता है– काम ने मेरे शत्रुओं का बध कर दिया और मेरे विकास के लिए मार्ग विस्तृत कर दिया है। एक अन्य मन्त्र मे काम को सर्वप्रथम उत्पन्न देवता बताकर अन्य देव, पितर और मनुष्यों मे ज्येष्ठ एंव श्रेष्ठ माना गया है। धरती, आकाश, तथा शकल दिशाओं मे काम का बडा बताकर बार– बार नमस्कार किया गया है। यजुर्ववेद तथा अथर्ववेद के अन्तयम मन्त्र मे अग्नि देवता को काम कहा गया है। वस्तुतः कामना पूर्ण करने के कारण अग्नि को काम की सज्ञां दी गई है। अथर्ववेद के मन्त्र मे बृहस्पति को काम बतलाया गया है। इसके भाष्य मे सायणाचार्य ने बृहस्पति को काम्यमान – फलप्रदाता के रूप मे निर्दिष्ट किया है। इन वेद मन्त्रों से स्पष्ट है कि वैदिक देवताओं मे अत्यन्त पराक्रमी और उदात्त रूप मे काम की गणना होती थी।

तैत्तिरीय ब्राहमण मे प्रजापति के सम्मुख काम के देवता– तुल्य प्रकट होने का उल्लेख है। एक बार स्वर्गलोक के अदृश्य हो जाने पर देवताओं ने प्रजापति के समीप जाकर प्रार्थना की। प्रजापित र्स्वग के अन्वेषण के लिए ध्यानावस्थित हो गये। उस समय काम ने प्रकट होकर कहा – प्रजापते । मेरे कारण तुम्हे श्रम करना पड रहा है। अतः आप मेरा विधवत् यजन किजिए, जिसमे स्वर्ग प्रकट हो जाये। गोपथब्राहमण मे स्पष्ट शब्दो मे काम को देवता माना गया है। एकाक्षरोपनिषद् मे भगवान को काम के नाम से सम्बोधित किया गया है। एक अन्य उपनिषद् मे काम से काम की उत्पत्ति बतलाकर काम की ही परम शिव कहा गया है। महाभारत के अनुसार धर्म के तीन– शम , काम तथा हर्ष स्व– स्व तेज से जगत् को धारण करते है। साथ ही रति को काम की पत्नी के रूप मे निर्दिष्ट किया गया है।

महाभारत के ही एक अन्य प्रकरण मे काम का वर्णन कामगीता के अन्तर्गत मिलता है। इसमे काम की विजय सम्पूर्ण मानव – जाति पर दिखाई गई है। काम का कहना है कोई भी प्राणी उचित उपायों का सहारा लिए बिना मेरा नाश नही कर सकता। जो मनुष्य अस्त्र– बल की अधिकता का अनुभव करता हुआ मुझे नष्ट करने का प्रयास करता है, उसके अस्त्रो मे मै अभिमान रूप से पुनः प्रकट हो जाता हूं। जो विविध प्रकार के यज्ञों द्वारा मुझे समाप्त करने का यत्न करता है , उसके चित मे मै उसी प्रकार उत्पन होता हूं , जिस प्रकार उदात्त प्राणियों मे धर्मात्मा । जो वेद और वेदान्त के स्वाध्यायपूर्ण साधनों द्वारा मुझे नष्ट करने का सतत प्रयतन करता है, उसके मन मै स्थावर प्राणियों मे जीवात्मा की भातिं प्रकट होता हूँ। जो सत्यपराक्रमी पुरूष धैर्य के बल से मुझे प्राजित करने की चेष्टा करता है, उसके मानसिक भावों के साथ मे घुल– मिल जाता हूँ कि वह मुझे पहचान भी नही पाता। जो कठोर व्रत का पालन करते हुए तपस्या मे ही मै प्रादुभुर्त हो जाता हूं। जो विद्वान पुरूष मोक्ष का सहारा लेकर विनाश का प्रयास करता है, उसे मै उसकी मोक्ष– विषयक आसिक्त से ही बाध देता हूं और उस पर हॅसता हुआ खुशी के मारे नाचने लग जाता हूं। एक मात्र मै ही समस्त प्राणियों मे अवध्य एंव सदा रहने वाला हूं यद्वापि काम की उक्त गर्वोक्तियॉ, धार्मिक अनुष्ठान एवं पुण्य कर्मो के विरूद्व दृढ चुनौती के समान है , तथापि भारतीय सस्कृतिं मे काम की व्यापकता और पराजेयता को जानकर ही भगवान श्री कृष्ण ने गीता मे अपने आपको धर्म से अविरूद्व काम कहा है।

शिवपुराण मे काम की सत्ता सर्वोपरि मानी गई है। ब्रहा, विष्णु एवं महेश की त्रिमूर्ति को काम का स्वरूप माना गया है। विश्व के सकल प्राणियों मे काम का समावेश होने से उसकी मूर्ति को विश्वरूपिणी एवं त्रिगुणमयी कहा गया है। काम जो सकंल्प के नाम से अभिहित है, उसका त्याग करके मूर्धन्य देवता भी कोई कार्य नही कर सकते। भूत, भविष्यत् और वर्तमान काल के सभी प्राणियों के आविर्भाव और तिरोभाव मे काम ही प्रधानतम कारण है।

काम ही मनुष्यों का सर्वस्व है और प्रत्येक युग मे स्वंय उत्पन्न होता रहता है। इन्द्रियों से परे होने पर इन्द्रियों मे समाविष्ट होने से काम के विषय मे कुछ कहा नही जा सकता। वह केवल बुद्धि एवं अनुभवगम्य है और सुख की पराकाष्ठा पर अवस्थित है। स्वर्गीय आन्नद, अमृतरस , परमात्मा एवं परब्रहा भी काम को ही कहा जाता है। सुप्त और जाग्रदवस्थाओ मे काम सभी के हृदयों मे विद्यमान रहकर विविध प्रकार के कर्मो का अनुष्ठान करता है।

कामदेव के जन्म तथा शिवजी द्वारा उसके भस्म किये जाने के सम्बन्ध मे भी विस्तृत वर्णन मिलता है। ब्रहा के मन से उत्पन्न होते ही काम ने अपने जनक तथा वहाॅ उपस्थित अन्य देवताओं के मन को मथ दिया था। अतः उसका नाम मन्थंन रख दिया गया। ससांर मे उसका रूप अत्यन्त कमनीय होने के कारण वह काम के नाम से व्यवहृत है। उसको मोहित करने के कारण उसका नाम मदन है, और इसी प्रकार सबका दर्प चूर्ण करने से उसे कन्दर्प भी कहा जाता है। इसी काम ने इन्द्र आदि देवताओं की प्ररेणा से समाधिस्थ शिव के मन मे पार्वती के प्रति विकार उत्पन्न करने का प्रयास किया। योगमुद्रा मे स्थित शिवजी को यह सहृा नही था। अतः इस अपराध के कारण उन्होने क्रुद्व होकर अपने तृतीय नेत्र द्वारा काम को भस्म कर दिया। इसके उपरान्त काम की पत्नी रति के करूण विलाप से और देवताओ की प्रार्थना से दर्याद्र होकर शिव ने काम के अनंग के रूप मे जीवित रहने तथा द्वापर मे श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युमन के रूप मे शरीर धारण करने का वरदान दिया है। एक अन्य प्रसंग मे काम की सार्वभौम रूप से विजय दिखाते हुए कहा गया है कि कोई भी ऐसा प्राणी नही है , जो काम से पराजित न हुआ हो।

सन्दर्भ

1. यथा देवता असुरान् प्राणुदन्त यथेन्द्रो दस्यूनधर्म तमो वबाधे । तथा त्वं काम मम ये सपत्नास्तानस्माल्लोकात् प्रणुदस्व दुरम् ।। अथर्ववेद, 9/2/18
2. अवधीत् कामो मम ये सपना उरुं लोमकरन्मह्यमेधतुम्।
   मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्त्रो मह्यं षडुर्वी घृतमा वहन्तुं । – वही, 9/2/11
3. कामो जज्ञे प्रथमो नैनं देवा आपुः पितरो न मर्त्यः ।
   ततस्त्वमसि ज्यांयान् विश्वहा महांस्तस्मै ते काम नम इति कृणोमि। वही, – 9/2/19
4. अग्निः परषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य । सम्राडेको वि राजति। – यजु0 12/117 ॥ अर्थव, 6/36/3
5. बृहस्पतिर्म आकूतिमा ....कामो अन्वेत्वस्मान् ॥ अथर्व, 19ô4ô4
6. तम् कामोऽब्रवीत् । पजापते ! कामेन वै श्राम्यसि । अहमु वै कामोऽस्मि । मा नु यजस्व । अथ वे सत्यः कामो
   भविष्यति । अनु स्वर्ग लोकं वेत्स्यसीति ॥. तै0 ब्रा0 3/10/2/3
7. कामो देवो देवता भवति ३३३३३३३ गोपथ ब्रा०ए 1/4/8
8. त्वं वज्रभृद् भूपतिस्त्वमेव कामः प्रजानं निहितो सि सोमे ॥ . एकाक्षरोपनिषद्, 5
   तस्मादुज्जृम्भते कामः कामत्कामः परः शिवः ॥ –. त्रिपुरातापिन्युपनिषद्, 2/2
9. त्रयस्तस्य पराः पुत्राः सर्वभूतमनोहराः । शमः कामो हर्षश्च तेजसा लोकधारिणः । कामस्य तु रति भार्या३३३३३३३ण्ण्ण् . महाभारत, आदिपर्व, 66/32/33
10. नाहं शक्योऽनुपायेन हन्तू भूतेन केनचित् II
   यो मां प्रयतते हन्तुं ज्ञात्वा प्रहरणे बलम् । तस्य तस्मिन् प्रहरणे पुनः प्रादुर्भवाम्यहम् ॥
   यो मां प्रयतते हन्तु यज्ञैर्विविधदक्षिणैः । जंगमेष्त्रिव धर्मात्मा पुनः प्रादुर्भवाम्यहम् ॥
   यो मां प्रयतते नित्यं वेदैर्वेदान्तसाधनैः । स्थावरेष्विव भूतात्मा तस्य प्रादुर्भवाम्यहम् ॥
   यो मां प्रयतते हन्तुं धृत्या सत्यपराक्रमैः । भावो भवामि तस्याहं स च मां नावबुध्यते ॥
   यों मां प्रतयते हन्तु मोक्षमास्थाय पण्डितः। तस्य मोक्षरतिस्थस्य नृत्यामि च हसामि च ।।
   अवधः सर्वभूतानामहमेक :सनातनः ।। – महाभारत, आश्वमेधिकपर्व 13/12–18
11. धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ॥ गीताए 7ô11
12. कामस्यैषा तु या मूर्तिब्रह्मविष्णवीश्वरात्मिका ।
   सर्वभूतात्मभूताख्या त्रिलिंगा विश्वरूपिणी ।
   नोशम्भुर्नेव वा विष्णु न ब्रह्मा नेन्दुभास्करो ।
   कर्तुमिच्छन्तिं यं मुक्त्वा कामः संकल्प एव हि ।
   भूता वा वर्तमाना वा जनिष्याश्चापि सर्वशः ।
   कामात्सर्वे प्रवर्तन्ते लीयन्ते वृद्धिमागताः ॥ शिवपुराणए धर्मसंहिताए 8/3–8
13. कामः सर्वमयः पुसां स्वयं कल्पसमुद्भवः ।
   वक्तुं न शक्यते यच्च परं चानुपरं च यत् । केवलं बुद्धिगम्यं च संस्पृर्शं प्रान्तसंस्थितम् ॥
   आनन्दममृतं दिव्यं परब्रह्म तदुच्यते । परमात्मेति चाप्युक्तं विकारारू कामसंज्ञिताः ।।
   सुप्तानां जाग्रतां वाथ सर्वेषां यो हृदि स्थितः ! नानाविधानि कर्माणि कुरुते ब्रह्म तन्महत् ॥
   वहीए 8/14–18
14. यस्मात्प्रमथसे तत्त्वं जातोऽस्माकं यथाविधेः ॥
   तस्मात्कन्दपनामा त्वं लोके ख्यातो भविष्यसि ।।
   जगत्सु कामस्वरूपस्त्वं त्वत्समो न हि विद्यते।
   अतस्वं कामनामापि ख्यातो भव मनोभव।।
   मदनान्मदनाख्यस्त्वं जातो दर्पात्सदर्पकः।
   तस्मात्कन्दपनामापि लोको पातो भविष्यसि ।
   शिवमहापुराण रुदसहितए सरस्वती खण्ड, 2/3/3–6
   संप्रेषिवस्तु विबुधैः पुरॊं चन्द्रप्रप्रांकित तपश्चन्द्रललाटस्य प्रधर्षयितुमेव हि।।
   ललाटनयनादग्नि निष्क्रान्तो येन मन्मथः। महारक्तारूणो दग्धः सर्वभूदयनोहरः ॥
   शिवपुराण ए धर्मसहिंता , 8/34–40
   अनंगस्तावदेव स्यात्कामो रतिपतिः प्रभुः । यावत्कृष्ण धरण्या रूक्तिणीपतिः ॥
   तदा कृष्णस्तु रुविमण्यां काममुत्पादयिष्यति । प्रद्यम्नाम तस्यैव भविष्यति न संशयः।।
   – शिवपुराण, पार्वती खण्ड, 3/19/38/39
15. कार्मनानिर्जित कश्चित्तिष्ठती महीतेल।। – वहीं , धर्मसहिता , 42/35